ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 14 अंकः 165 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका फरवरी 2022

"मंत्र एक ही गुरु का चलेगा, आपके professional (व्यावसायिक) गुरु हैं तो वो उसके साथ नहीं चलेगा और ध्यान मेरा करना पड़ेगा।"

-सद्गुरुदेव सियाग

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

भौतिक विज्ञान के शोधकर्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान और ज्ञान प्राप्ति का साधन

सद्गुरुदेव के चरण कमलों में पूर्ण समर्पण

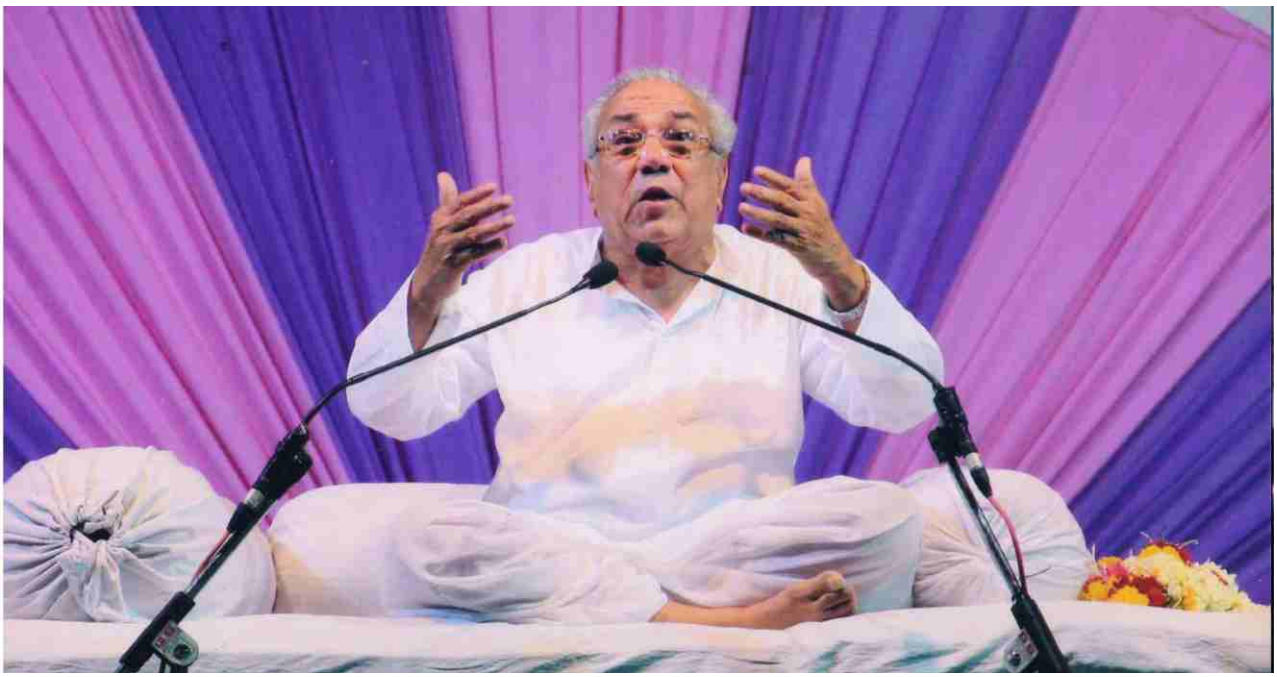

''मेरी मान्यता है कि भौतिक विज्ञान के शोधकर्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान इस ज्ञान (सिद्धयोग) से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ता को करवा देगी। इस प्रकार विश्व के मानव की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

मैं तो संसार में इस ज्ञान को बाँटने के लिए ही मेरे संत सद्गुरुदेव के आदेश से निकला हूँ। यह ज्ञान मात्र गुरु-कृपा से ही प्राप्त होना संभव है। इसकी कीमत मात्र गुरु के चरणों में पूर्ण समर्पण है। और किसी भी विधि या बौधिक प्रयास से यह ज्ञान प्राप्त होना असंभव है।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 14 अंक: 165 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका फरवरी 2022

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

भौतिक विज्ञान के शोधकर्ताओं 2
संसार का हर प्राणी ईश्वर कृपा का अधिकारी है। 4
सद्गुरुदेव की असीम कृपा से अगम लोक का भेदन 8
स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम 10
साधना विषयक बातें 13
रूपान्तरण (Transformation) 17
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....24
कहानी - सांसारिकता का मोह 26
दिव्य जन्म और दिव्य कर्म 27
सिद्धयोग ध्यान शिविरों की झलकियाँ 31
सिद्ध-योगियों की महिमा 41
योग के आधार 48
साधकों के अनुभव 51
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 56
ध्यान की विधि 59

संसार का हर प्राणी ईश्वर कृपा का अधिकारी है।

संसार के सभी जीवधारियों में मनुष्य योनि सर्वोत्तम है। मनुष्य योनि के द्वारा ही जीव मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। यह योनि एक ऐसा संगम है, जहाँ से अगर जीव अच्छे कर्म करता है तो निरन्तर ऊपर उठता हुआ, निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्त कर लेता है और यदि इस संगम से मनुष्य बुरे कर्मों द्वारा पतन की ओर बढ़ना प्रारम्भ कर देता है तो फिर उसे चौरासी लाख योनियों के भोग के बाद फिर मनुष्य योनि मिलती है।

इस प्रकार जीव मनुष्य योनि को अगर व्यर्थ में बिता देता है तो समझो कि उसके कर्म फल बहुत बुरे हैं। कर्मों की गति गहन है। ईश्वर के सिवाय इसको समझने की क्षमता किसी में नहीं है। कलियुग में मोक्ष प्राप्ति के दो आसान रास्ते हैं, (1) ईश्वर के नाम का निरन्तर जप करना (2) दान।

इस युग का मानव प्रदर्शन और प्रचार करके अपने आपको सच्चा अध्यात्मवादी समझ रहा है। जब कि यह रास्ता प्रदर्शन का है ही नहीं। ईश्वर के नाम की हमारे संतों ने बहुत महिमा गाई है। इस युग में 'नाम' में भारी चमत्कार है। संत कबीरदास जी ने इसकी महिमा करते हुए कहा है:-

"नाम अमल उतरै न भाई।
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,
नाम अमल दिन बढ़ै सवाई।"

संत सत्गुरु नानकदेव जी महाराज ने भी इन्हीं शब्दों में नाम की महिमा गाई है:-

भांग धतूरा नानका,
उतर जाय प्रभात।
नाम खुमारी नानका,
चढ़ी रहे दिन-रात।।

गोस्वामी तुलसी दास जी ने भी कहा है:-

"कलियुग केवल नाम आधारा,

www.the-comforter.org

सुमरि सुमरि नर उतरहि पारा''।

इस युग का मानव उपर्युक्त 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' की बात को केवल अतिशयोक्ति की संज्ञा देकर अपने अल्प ज्ञान पर गौरवान्वित हो रहा है। हमारे धर्म में गुरु का स्थान बहुत ऊँचा माना गया है। गुरु की महिमा का वर्णन करना सम्भव नहीं है। यह लक्ष्य निम्न दोहे से स्पष्ट होता है:-

''गुरु गोविन्द दोनों खड़े,
किसके लागूं पांव।
बलिहारी गुरु देव की,
गोविन्द दियो मिलाय।।''

उपर्युक्त वाक्य से गुरु पद की गरिमा स्पष्ट झलकती है। मीराबाई ने भी इस सम्बन्ध में कहा है कि-

''अगर मुझे गुरु गोविन्द दोनों में से एक को चुनने को कहा जाय तो मैं प्रथम गुरु को चुनूंगी क्योंकि गुरु में गोविन्द से मिलाने की शक्ति है। अगर गुरु को छोड़, गोविन्द को चुनूं और यदि देवयोग से गोविन्द से बिछुड़ जाऊँ तो फिर उससे मिलना सम्भव नहीं।'' स्वामी विवेकानन्द जी ने भी इस संदर्भ में कहा है कि ''आध्यात्मिक जगत् में गुरु कृपा बिना चलना असम्भव है, परन्तु इस युग में सच्चा गुरु मिलना बहुत कठिन है।''

सन् 1967 से लेकर 1982 तक मैं भी यही कहता था कि मेरे और ईश्वर के बीच में गुरु की दलाली की क्या आवश्यकता है? इन 15 सालों में मेरी तिजोरी आध्यात्मिक धन से ठूंस-ठूंस कर भर चुकी थी, परन्तु उसमें से एक पैसा भी निकाल कर खर्च करने की स्थिति में नहीं था। 1983 में ज्यों ही संत सद्गुरुदेव श्री गंगाईनाथ जी महाराज का चरण रज माथे पर लगाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो काया पलट गई। गुरुदेव ने कृपा करके उस आध्यात्मिक धन से भरी तिजोरी की चाबी मुझे अनायास ही सौंप दी। मैं

www.the-comforter.org

इस स्थिति से ऐसा चकाचौंध हो गया कि समझ ही नहीं पा रहा था कि इस अपार धन का कैसे सदुपयोग करूँ?

मैं अभी संभल ही नहीं पाया था कि 31 दिसम्बर 1983 की क्रूर काल रात्रि ने उस महान् आत्मा को भौतिक रूप से छीन लिया। इसके बाद करीब दो साल (अगस्त 1985) तक मैं अपनी सुध- बुद्ध खोये पागल की तरह से भटकता रहा।

23 अगस्त 1983 से 6 अगस्त 1985 तक मैं बिना किसी भौतिक कारण के अपनी नौकरी से अनुपस्थित रहा। इसके बाद नौकरी पर उपस्थित हुआ। जामसर जाकर समाधि पर पूजा अर्चना की तो दूसरी ही दुनिया में पहुँच गया। धीरे-धीरे जब शान्त हुआ तो यह देख कर चकित रह गया कि गुरुदेव अनायास ही अपनी असंख्य पीढ़ियों की अथाह आध्यात्मिक धन राशि मेरे नाम वसीयत कर गये। मैं आज भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि मेरे पास कितना आध्यात्मिक धन है और इसका कैसे उपयोग करूँ? परन्तु एक बात से, मैं आश्वस्त हूँ कि आज भी पग-पग पर मुझे गुरुदेव पथ प्रदर्शित करते हैं।

गुरु कृपा से मेरे साथ आध्यात्मिक सम्बन्ध जोड़ने वाले लोगों को 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' का आनन्द आने लगता है। मुझमें कुछ भी शक्ति नहीं है। यह गुरुदेव के आशीर्वाद और ईश्वर कृपा से हो रहा है।

मुझे इस संबंध में कोई भ्रम नहीं है। मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि यह शक्ति असंख्य गुरुओं द्वारा संचित की हुई है, जो कि अनायास ही मुझे गुरुदेव द्वारा वसीयत में मिल गई। गुरु कृपा की महिमा करने को, न मेरे पास भाव है, और न ही शब्द। अतः उसका वर्णन करना कम से कम मेरे वश की तो बात नहीं है।

इस युग में दूसरा मोक्ष प्राप्ति का रास्ता दान है। हमारे संतों ने कहा है

www.the-comforter.org

"कलियुग में दान ही एक मात्र धर्म है। तप और कठिन योगों की साधना इस युग में नहीं होती"।

दान की व्याख्या करते समय हमारे संतों ने कहा है कि "सब दानों में श्रेष्ठ-धर्म दान (अध्यात्म दान) है। फिर विद्या दान और इसके बाद प्राण दान। भोजन और वस्त्र का दान सबसे हल्का दान है"।

इसी संदर्भ में व्यास जी ने भी कहा है कि "आध्यात्मिक ज्ञान दान ही सर्वोत्तम दान है।" उपर्युक्त तथ्यों से प्रभावित होकर मेरे गुरुओं द्वारा अर्जित विपुल आध्यात्मिक ज्ञान दान के लिए संसार में निकल पड़ा हूँ। मेरा अपना इस में कुछ नहीं है। जो कुछ भी बाटूँगा उसका फल तो उन्हीं पुण्यात्माओं को मिलेगा। मैं तो मात्र उनका सेवक हूँ। अतः मैं तो इस काम की मजदूरी मात्र लेने का हकदार हूँ।

ईश्वर का कोई ठेकेदार नहीं, वही सब का ठेकेदार है। अतः संसार में इस समय जो वर्ग, मात्र अपने आपको इसका अधिकारी मानता है वह संसार के प्राणियों को गुमराह कर रहा है। इस सम्बन्ध में वात्स्यायन ने स्पष्ट कहा है:- "जिसने यथाविहित धर्म की अनुभूति की है, वह म्लेच्छ होने पर भी ऋषि हो सकता है। इसी लिए प्राचीन काल में वेश्या पुत्र वशिष्ठ, धीवर तनमय (मछुआरी पुत्र) व्यास, दासी सुत नारद आदि प्रभृति ऋषि कहलाये थे।"

वाल्मिकी, रैदास और कबीर आदि अनेक संतों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि "जाति पांति पूछे न कोई, हरि को भजै सो हरि को होई।" अब वह समय दूर नहीं है जब तम के घोर अन्धकार को चीरता हुआ धर्म का सूर्य उदय होगा और संसार से तामसिकता को पूर्ण रूप से नष्ट कर देगा। इस प्रकार श्री अरविन्द के शब्दों में "धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
05 फरवरी 1988

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की असीम कृपा से अगम लोक का भेदन

''मंत्र एक ही गुरु का चलेगा, आपके **professional** (व्यावसायिक) गुरु हैं तो वो उसके साथ नहीं चलेगा और ध्यान मेरा (सद्गुरुदेव सियाग) करना पड़ेगा।''

''हमारे सभी ऋषि कह गये हैं, उस परमसत्ता का निवास अपने शरीर के भीतर ही है। हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ भी यही बात कहते हैं। अतः अन्तर्मुखी आराधना के बिना काम बन नहीं सकता। यह आराधना भी कोई आसान कार्य नहीं है। वह परमसत्ता ऐसे भयंकर चक्रव्यूह को पार करने पर मिलती है, जिसे पार करना अकेले जीव के लिए बहुत कठिन है। इस रास्ते पर चलने के लिए किसी भेदी संत सत्गुरु की आवश्यकता होती है। भगवान् राम और कृष्ण को भी गुरु धारण करना पड़ा था। इसके अलावा सभी संत, गुरु की महिमा का गुणगान कर गये हैं। अगम लोक का भेद और रास्ता, केवल गुरु कृपा से ही प्राप्त हो सकता है और कोई रास्ता ही नहीं।

संत कबीर ने कहा है:- ''कबीरा धारा अगम की सद्गुरु दई लखाय,

www.the-comforter.org

उलट ताहि पढ़िये सदा स्वामी संग लगाय।''(राधाकृष्ण)कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया ''गुरु गोविन्द दोनों खड़े किसके लागूँ पांव, बलिहारी गुरुदेव की गोविन्द दियो मिलाय''। संतों ने उस परमसत्ता का स्थान स्पष्ट करते हुए कहा है:-

ज्यों नैनन में पूतली, त्यों खालिक घट माहिं।
मूरख लोग न जानहीं, बाहर ढूंढन जाहिं।।
ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझ में, जाग सके तो जाग।।
पुष्प मध्य ज्यों वास है, व्याप रहा सब माहिं।
संतों माहीं पाइये, और कहूँ कुछ नाहिं।।

चेतन गुरु की वाणी में जो प्रभाव और शक्ति होती है, वह छिपी नहीं रह सकती। वही बात एक कथावाचक या उपदेशक बहुत ही अच्छे ढंग से कह सकता है, वह बहुत कर्णप्रिय लगेगी, परन्तु उपदेश समाप्त होने के बाद उसका कुछ भी प्रभाव आप पर नहीं बचेगा।

उस बात से, आप में कोई परिवर्तन नहीं आएगा। परन्तु वही बात 'चेतन गुरु' द्वारा कही जाने पर इतनी प्रभावशाली और गहरी पैठ कर जाती है कि आप जीवन भर उसे भूल नहीं सकते। वह अपके जीवन में जबरदस्त परिवर्तन कर देगी।

एक बार जिज्ञासु बनकर ऐसी सत्संग में चले गये तो फिर बार-बार जाने की इच्छा होगी, जिसे आप रोक नहीं सकेंगे। इस प्रकार आपका जीवन परिवर्तित हो जायेगा, आप द्विज बन जायेंगे।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम

श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित पुस्तक –''भारत का पुनर्जन्म'' में विषद वर्णन किया है कि किस प्रकार विदेशी आतताईयों व भारत के भीतर सत्ता लोलुप लोगों ने इस देश का शोषण किया, लूटा और अब कल्कि के आगमन से किस प्रकार देश अपने उदीयमान आलोक से वापस विश्व गुरु बनेगा और पूरे विश्व को शांति का पैगाम देगा। साधकों के ज्ञान बोध के लिए क्रमशः हर अंक में कुछ जानकारियाँ वर्णित की जाएंगी।

हृदय मूर्च्छित न होने पाये, और न उदासी ही छाये, तथा कोई अदूरदर्शी तीव्र उत्तेजना भी न हो, न अंध-आघाती पागलपन। हमारी भयंकर परीक्षा का समय पारंभ हो रहा है। मार्ग सरल नहीं होने का, मुकुट सस्ते में नहीं मिल पायेगा। भारत मौत के साये की घाटी में, अंधकार और यंत्रणा के घोर संत्रास में पतित होता जा रहा है। हमें समझ लेना चाहिए कि अभी जो हम कष्ट उठा रहे हैं वह उस यंत्रणा का एक छोटा-सा हिस्सा है, जो हमें आगे भुगतनी पड़ेगी और यही समझकर दृढ़ता के साथ, भावोन्माद के बिना कार्य करें। वर्तमान क्षण में पहली अपेक्षा साहस की है, ऐसे साहस की जो पीछे हटना अथवा सिकुड़ना जानता ही न हो।

''जहाँ एक महाविप्लव में किसी 'उच्च सत्ता' की इच्छा क्रियाशील होती है, वहाँ कोई भी व्यक्ति अपरिहार्य नहीं होता।''

हमें बचपन से ही अपने लड़कों के मस्तिष्क देश की भावना से भरना है और हर मोड़ पर यह विचार उन्हें देना है तथा उनके सारे युवा जीवन को उन गुणों के अभ्यास के एक पाठ के रूप में

www.the-comforter.org

परिणत करना है, जो बाद में उन्हें देशभक्त और नागरिक बना सकें। यदि हम इसका प्रयास नहीं करते तो बेहतर होगा कि हम भारत को एक राष्ट्र के रूप में सृजित करने का विचार कतई छोड़ दें; क्योंकि ऐसे अनुशासन के बिना राष्ट्रवादिता, देशभक्ति, पुनर्जीवन थोथे शब्द और विचार हैं, जो राष्ट्र की अपनी आत्मा का हिस्सा कभी नहीं बन सकते और इसलिए एक महान् उपलब्ध तथ्य का रूप नहीं ले सकते। देशभक्ति की निरी सैद्धांतिक शिक्षा किसी काम की नहीं।

विशेषकर इस क्षण भारत को जो चाहिए वह है आक्रामक गुण, उड़ान भरती आदर्शवाद की भावना, उद्धत सृजन, निर्भय प्रतिरोध।

साहसिक निष्क्रियता की नकारात्मक तामसिक भावना हमारे पास पहले से काफी ज्यादा मौजूद है। हमें एक और ही प्रशिक्षण और प्रवृत्ति को संवारने की आवश्यकता है, मन की एक दूसरी आदत। आज की परिस्थिति में हम डेन्टन के उस सशक्त आदर्शोक्तिको लागू करें कि हमें जो चाहिए,सबसे ऊपर जो हमें सीखना है, वह है ललकार कर चुनौती देना, फिर से चुनौती देना और अभी भी चुनौती देना।

उस स्वाभाविक लगाव के अलावा जो हर आदमी को अपने देश, उसके साहित्य, उसकी परंपराओं, उसके रीति-रिवाजों और प्रथाओं से रहता है, देशभक्ति को एक अतिरिक्त प्रेरणा राष्ट्रीय सभ्यता के माने हुए उत्कर्ष से मिलती है। यदि ब्रिटेनवासी इंग्लैंड से, उसके सारे दोषों के होते हुए भी प्यार करते हैं तो हम भारत से प्यार करने में क्यों चूकें, जिसके दोष उस समय तक छाँटकर, जितने हो सकते थे, कम से कम कर दिये गये थे, जब तक कि विदेशी कब्जों ने सारे समाज को तहस-नहस नहीं कर दिया था। किन्तु बजाय इसके कि ऐसी सभ्यता

www.the-comforter.org

की पताका लेकर सारे विश्व में फहराने की स्वाभाविक महत्त्वाकांक्षा हमें वशीभूत कर लेती, हम उसकी जन्मभूमि में ही उसे अविकल नहीं रख पा रहे हैं। इस बहुमूल्य विरासत में हम कुछ भी जोड़ नहीं पाये हैं, उल्टे हम अपने को और उस पीढ़ी को, जो अभी पैदा नहीं हुई है, उनकी जायज़ विरासत के पूर्ण उपभोग से वंचित रखाते आये हैं। 'सिजविक' के अनुसार भौतिक विस्तार, आध्यात्मिक विस्तार की इच्छा से उत्पन्न होता है और इतिहास भी इस दावे का समर्थन करता है। परन्तु तब फिर भारत विश्व की पहली शक्ति क्यों नहीं बनता? उसके सिवाय विश्व पर आध्यात्मिक प्रभाव फैलाने का निर्विवाद अधिकार और किसे है? यह स्वामी विवेकानन्द के अभियान की योजना थी। अपनी आध्यात्मिक महानता के वश में करनेवाले भाव के द्वारा भारत को एक बार फिर से अपनी महानता का एहसास कराया जा सकता है। महानता का यह एहसास ही सारी देशभक्ति का प्रमुख पोषक है। केवल इसी से सारे आत्मह्रास का अंत किया जा सकता है और जो जमीन खो चुकी है उसे फिर से पाने की ज्वलंत अभिलाषा उत्पन्न की जा सकती है।

उसमें (बंगाल के नेता में) एक राजनीतिज्ञ के गुण–तगड़ापन, दृढ़ता, कार्य का एक रास्ता तय करने की योग्यता और उसे कार्यान्वित करने का साहस–है ही नहीं। ऐसा कोई भी व्यक्ति जो संघर्ष से झिझकता हो अथवा आक्रमण के विचार से ही भयभीत होता हो, उन निरंकुश शक्तियों को वश में करके उनका नेतृत्व करने की आशा नहीं कर सकता जो बीसवीं सदी में उभर कर ऊपर आ रही है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग पर चलने में सहायता मिल सके।

www.the-comforter.org

शिशु है तुम्हारा चैत्य पुरुष। जो वक्ष से चढ़-उतर रही है वह है बहिःप्रकृति की बाधा, आंतरिक सत्य को स्वीकार करना नहीं चाहती, ढक कर रखना चाहती है।

वह स्थान है पीछे मेरुदण्ड के बीच में चैत्य का स्थान। जो वर्णन कर रही हो, वे सब हैं चैत्य पुरुष के लक्षण।

हाँ, मनुष्य की चेतना का केंद्र है वक्ष में जहाँ चैत्य पुरुष का स्थान है।

मूलाधार से पैर की तली तक को भौतिक का स्तर कहते हैं, पैर से नीचे अवचेतना का राज्य है।

ऊपर और नीचे अनेक स्तर हैं, पर प्रसिद्ध हैं नीचे के चार स्तर-मन का स्तर, चैत्य का स्तर, प्राण का स्तर और शरीर का स्तर-और ऊपर के हैं ऊर्ध्व मन के अनेक स्तर, उसके बाद विज्ञान का स्तर और सच्चिदानन्द।

यदि नीचे चली भी जाओ तो वहाँ भी शांत हो शक्ति की ज्योति और शक्ति का आह्वान कर, उन्हें वहाँ उतारो। जैसे ऊपर वैसे ही नीचे, अपने अंदर शक्ति का राज्य संस्थापित कर

दो।

जल चेतना का प्रतीक है-जो उठ रहा है वह है चेतना की आकांक्षा या तपस्या। यदि सफेद मिश्रित नीला प्रकाश हो तो वह मेरा प्रकाश है- यदि साधारण नीला हो तो वह है ऊर्ध्व ज्ञान का प्रकाश।

हमेशा स्थिर रहो और शक्ति की ऊर्ध्व चेतना को अवतरित होने दो-उससे ही बहिश्चेतना क्रमशः रूपांतरित हो जायेगी।

शांत भाव से समर्पण करती-करती बढ़ती चलो, जिन पुरानी चीजों का रूपांतर अपेक्षित है, वह क्रमशः हो जायेगा।

भगवान् की संतान होने पर भी ऐसा कोई भी साधक नहीं, जिसमें प्रकृति के अनेक छोटे-छोटे दोष न हो। जब इन सबका सुराग मिल जाता है तो इनको त्याग करना होता है, शक्ति का संबल और भी दृढ़भाव से चाहना होता है जिससे धीरे-धीरे इस क्षुद्र प्रकृति के सारे दोष विनष्ट हो जायें, लेकिन विश्वास और शक्ति पर निर्भरता और उनके प्रति समर्पण होने चाहिये सतत और अटूट। इन सब दोषों को पूरी तरह बाहर निकालने में समय लगता है, ये अभी भी बने हुए हैं, जानकर विचलित मत होओ।

कौन चले जायें? जिनमें आंतरिक भाव नहीं, जिन्हें शक्ति पर श्रद्धा-विश्वास नहीं, जो शक्ति की इच्छा की अपेक्षा निजी कल्पना को बड़ा समझते हैं, वे जा सकते हैं। लेकिन जो सत्य को चाहता है, श्रद्धा और विश्वास चाहता है, जो शक्ति का वरण करता है उसे डरने की जरूरत नहीं, उसके सामने हजारों बाधाएँ भी आयें, उन्हें वह अतिक्रम कर लेगा, यदि स्वभाव में अनेक दोष हों तो भी उन्हें वह सुधार लेगा, यदि पतन भी होता है तो फिर उठ खड़ा होगा-अंत में वह एक दिन साधना के गंतव्य स्थल पर पहुँचेगा।

यह उचित मनोभाव नहीं है। तुम्हारी साधना ध्वस्त नहीं हुई, शक्ति ने

www.the-comforter.org

तुम्हारा त्याग नहीं किया, तुम से दूर नहीं गयीं, तुमसे नाराज नहीं हैं–ये सब है प्राण की कल्पनाएँ, इन सब कल्पनाओं पर ध्यान न दो, इन्हें प्रश्रय न दो। शांत, सरल भाव से शक्ति पर भरोसा रखो, कठिनाइयों से डरो नहीं शक्ति को भीतर से पुकारो–तुमने जो उपलब्ध किया है, वह सब तुम्हारे भीतर ही है, नयी उन्नति भी होगी।

चेतना ऊर्ध्व सत्य की ओर खुल रही है। स्वर्ण–मयूर सत्य की विजय। शक्ति, भौतिक तक उतर रही है–उसके फलस्वरूप सत्य का प्रकाश (स्वर्णिम प्रकाश) उतर रहा है और तुम शक्ति की ओर शीघ्रता से बढ़ रही हो।

शरीर का पिछला भाग सबसे ज्यादा अचेतन होता है–प्रायः सबसे अंत में आलोकित होता है। तुमने जो देखा है वह सच है।

शक्ति की विजय होगी ही, यह विश्वास हर समय रखकर शांत, और भयशून्य हो साधना करनी चाहिए।

"शक्ति ही है गंतव्य स्थल, उनके अंदर सब कुछ है, उन्हें पाने से सब कुछ मिल जाता है, उनकी चेतना में वास करने से और सब कुछ अपने आप खिलने लगता है।"

शक्ति का भाव तो बदलता नहीं–एक ही रहता है। लेकिन साधक अपने मन के भाव के अनुसार देखता है कि शक्ति बदल गई है–पर यह सब सच नहीं है।

ध्वंस हो जाने से परिवर्तन किसका होगा? प्राण और शरीर की पुरानी प्रकृति का ध्वंस करना होगा, प्राण और शरीर का नहीं।

यह बात ठीक है कि शक्ति सबके भीतर विराजमान है और उनके साथ एक संबंध रहना चाहिये लेकिन संबंध व्यक्तिगत नहीं है, वह लोगों के साथ होता हुआ भी शक्ति के साथ है, एक विशाल ऐक्य का संबंध। एक ओर शांति और सत्य चेतना की वृद्धि, दूसरी ओर समर्पण, यही है सच्चा पथ।

www.the-comforter.org

प्राण का नाश करने की इच्छा गलता इच्छा है-प्राण के नाश से शरीर नहीं बचेगा, शरीर नहीं बचेगा तो साधना भी नहीं होगी। लगता है तुमने शक्ति बहुत ज्यादा ही खींच ली है-इसीलिये शरीर जैसे उसे ठीक धारण नहीं कर पा रहा। जरा शांत रहने से सब ठीक हो जाएगा।

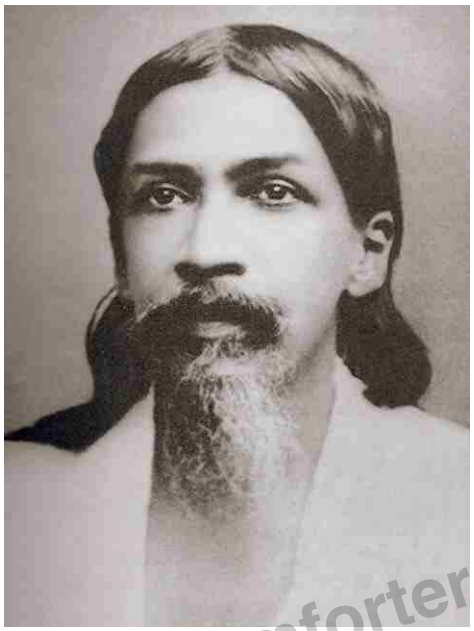

हाँ, तुमने ठीक ही देखा-मस्तक के ऊपर सात कमल या चक्र हैं-फिर भी ऊर्ध्व मन न खुलने तक ये दिखायी नहीं देते।

चैत्य पुरुष के पीछे और चैत्य अवस्था के पीछे अहंकार टिक नहीं सकता। लेकिन प्राण से अहंकार आकर उसके साथ युक्त होने का प्रयास कर सकता है। यदि इस तरह का कुछ देखो तो उसे ग्रहण न कर, उसे त्यागने के लिये शक्ति के प्रति समर्पण करो।

सीधा रास्ता है चैत्य का पथ जो समर्पण के बल से और सत्य दृष्टि के प्रकाश में बिना मुड़े-तुड़े सीधा ऊपर की ओर जाता है-जो पथ थोड़ा सीधा, थोड़ा घुमावदार होता है वह होता है मानसिक तपस्या का पथ। और जो एकदम घुमावदार है वह है प्राण का पथ, आकांक्षाओं, कामनाओं से संकुल पथ, ज्ञान भी नहीं, फिर भी प्राण में सच्ची अभीप्सा है, इसलिए किसी तरह चला जा सकता है।

"जितना लोग बाधाओं के बारे में सोचते हैं, उतना ही वे उन पर हावी होती हैं। शक्ति के प्रति अपने को खोलकर भगवान् के बारे में ज्यादा सोचना चाहिये-प्रकाश, शांति और आनंद की बात। यह असीम शांति जितनी बढ़े उतना ही अच्छा। शांति ही है योग का आधार।"

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

परमेश्वर ने सृष्टि का सृजन किया और उसमें विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों आदि का विकास किया। भूमण्डल पर 'मनुष्य', परमेश्वर की सर्वोच्च कृति है, उसमें ज्ञान और विज्ञान की असीम पराकाष्ठा है। सृष्टि के क्रमिक विकास में एक कोशिकीय जीव से विशालकाय जीवों के साथ साथ मनुष्य का जन्म हुआ। प्रत्येक मनुष्य के चेतना का स्तर अलग अलग होता है। चेतना के स्तर के अनुसार ही मनुष्य की जगत् में पहचान होती है।

अतः मनुष्य सृष्टि की सर्वोच्च कृति है लेकिन अभी इस कृति में बहुत सारी अपूर्णता है जो अगले विकास में इन अपूर्णताओं को पूर्ण किया जा सकता है और वह है-अतिमानव। एक ऐसा दिव्य मानव जो रोग, शोक, पीड़ाओं और दुःख-दर्दों से रहित होगा। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार मानव मात्र का दिव्य रूपान्तरण हो जाएगा। इस कार्य के लिए उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या करके सृजनकर्ता को, भूमण्डल पर अवतरित होने के लिए करूण पुकार की। नये युग अर्थात् सत्युग के आगमन और नये जगत् के निर्माण के लिए 24 नवम्बर 1926 को भूमण्डल पर परमसत्ता का भौतिक देह में अवतरण हुआ।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का मुख्य उद्देश्य है-संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण। इस कार्य के लिए उन्होंने जो संजीवनी मंत्र दिया है, उनका बिना किसी पल को गँवाएं सघन जप और नियमित ध्यान पर जोर देना है। इस रूपान्तरण के कार्य के लिए श्री अरविन्द ने विस्तार से समझाया है कि यह कैसे पूर्ण होगा? साधकों के ज्ञान-बोध के लिए यह शीर्षक दिया जा रहा है-

www.the-comforter.org

वह विधान अत्यंत दुरूह हो यह संभव है, पर होता वह सदा एक विधान है- और रूपांतर की संपूर्णता एकमात्र उसके अंदर, एक देह के अंदर संपन्न होनी संभव नहीं। मनुष्य अकेले अपनी निजी संपूर्णता पर पहुँच सकता है, मनुष्य अकेले अपनी चेतना में असीम और संपूर्ण बन सकता है - आन्तरिक सिद्धि की कहीं कोई सीमा नहीं है, किन्तु इसके विपरीत बाह्य सिद्धि अनिवार्य रूप से सीमित होती है। इसी कारण से एक व्यापक प्रभाव यदि अभीष्ट हो तो उसके लिए कम से कम एक अल्पिष्ठ संख्या में सदेह व्यक्तियों का होना आवश्यक है।

वैयक्तिक एकाग्रता के चौदह

वर्षों बाद सन् 1940 में श्री अरविन्द और श्री माँ ने अपने आश्रम के द्वार खोल दिये। इस प्रकार रूपांतर का तृतीय काल आरंभ हुआ, जो कि प्रसार का, पार्थिव कार्य का काल है, और अभी भी जारी है।

तृतीय चरण (आश्रम)

भारतवर्ष में 'आश्रम' एक धार्मिक अथवा आध्यात्मिक संगठन होता है जिसके सदस्यों ने किसी गुरु की शरण में ध्यान, चिन्तन, योगानुष्ठान में रत रहने और 'मोक्ष' प्राप्त करने के उद्देश्य से संसार को त्याग दिया होता है। इसके अतिरिक्त कि अनेक शिष्य श्री अरविन्द और श्री माँ की छत्रछाया में एकत्रित थे, इस परिभाषा के साथ श्री अरविन्द आश्रम का कुछ भी मेल नहीं था। यह एक आकर्षक मठ की तरह नहीं था, और सब झंझटों से बच कर बैठने या शान्ति का स्थान तो बिल्कुल भी नहीं। इसे तो एक लोहार की भट्टी कहना अधिक ठीक होता। इस आश्रम का निर्माण संसार-परित्याग के उद्देश्य से नहीं बल्कि एक नये आकार-प्रकार के जीवन का विकास हेतु एक केन्द्र और अनुभव-क्षेत्र के रूप में किया गया है। जब वे बंगाल में भी थे, जब आश्रम बनाने का कोई विचार नहीं था, तभी श्री अरविन्द कहते थे : आध्यात्मिक जीवन की सबसे प्रबल अभिव्यक्ति उस मनुष्य के अन्दर होती है जो योगशक्ति के बल पर साधारण मानव-जीवन यापन करे। आन्तरिक और बाह्य जीवन के ऐसे संयोग द्वारा ही अन्ततः मानव-जाति का उद्धार होगा, और वह सबल और दिव्य बनेगी। इसी कारण श्री अरविन्द आश्रम सामान्य जीवन के साथ बिल्कुल घुला-मिला था, जनसाधारण की गिचपिच के बीच स्थित था क्योंकि रूपांतर वहाँ

www.the-comforter.org

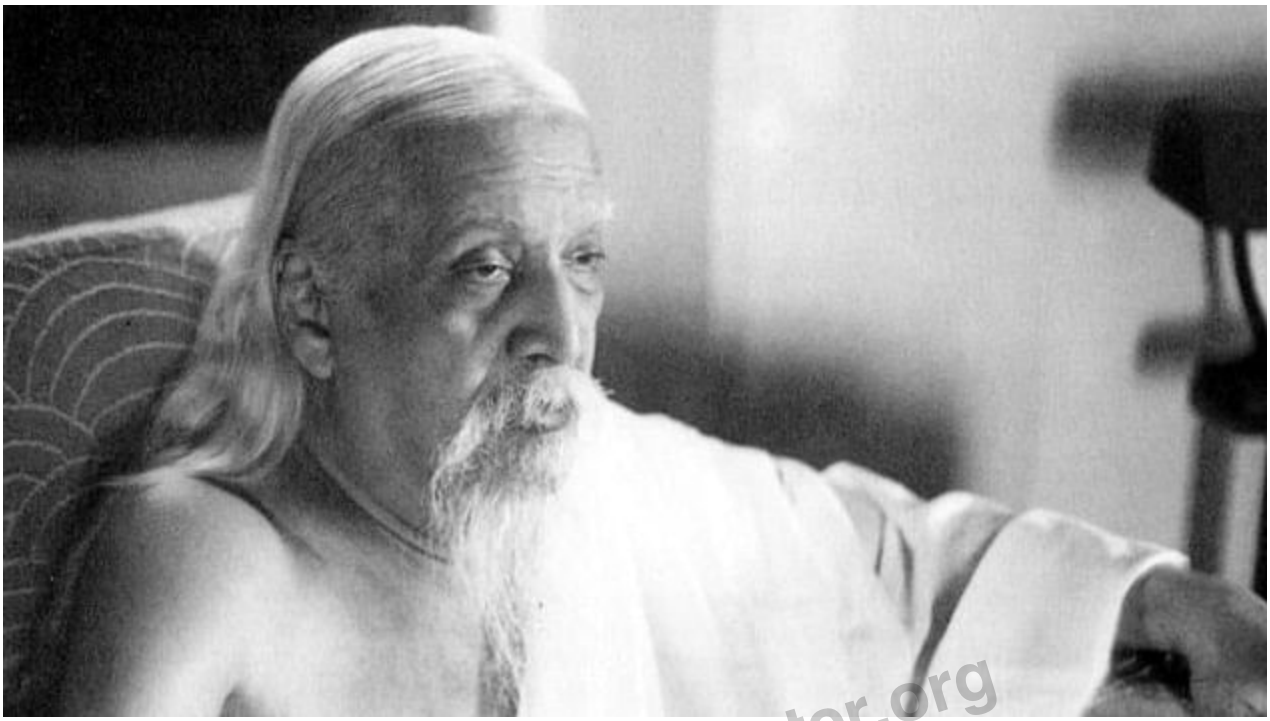

निष्पन्न होना आवश्यक है, हिमालय के शिखर पर नहीं। आश्रम के मुख्य भवन के अलावा, जहाँ श्री माँ और श्री अरविन्द निवास करते थे, लगभग बारह सौ साधक, सब देशों और वर्गों के स्त्री-पुरुष, और चार-पाँच सौ बच्चे थे, तीन सौ से अधिक अलग-अलग मकानों के अन्दर पांडिचेरी नगर में सब ओर फैले हुए थे। आन्तरिक ज्योति के अतिरिक्त और कोई प्राचीर उनकी रक्षा नहीं कर रही थी। साधक तुरंत ही अपने आपको बाज़ार में पाता था।

अतः पश्चिम का निवासी जब शान्ति की खोज और 'योग' सीखने का विचार ले, यहाँ आता था तो उसे निराश होना पड़ता था। पहली बात यह कि यहाँ उसे कुछ भी सिखाने की चेष्टा नहीं की जाती थी (बल्कि सीखे हुए को भुलाने की आवश्यकता पड़ती थी)। न कहीं कोई शिक्षण होता था, न प्रवचन। केवल श्री अरविन्द के ग्रंथ थे और थे श्री माँ के प्रश्न और उत्तर जो सभी को प्राप्त थे

www.the-comforter.org

(वैसे दूसरे धर्मग्रंथ भी उपलब्ध थे चाहे वे परंपरागत हों अथवा अन्य)। नियम भी कोई नहीं थे। एक असाधारण रूप से सक्रिय, बाह्य जीवन के मध्य साधक को सब अपने आप, अपने अन्दर ही खोजना होता था। उसे उसी पर छोड़ दिया जाता था। बाकी एक ऐसे काम के लिए कोई नियम बना भी कैसे सकता जो मानसिक, प्राणिक, आत्मिक, सब विकासस्तरों, सभी मानव-वर्गों, सारी धर्मपरंपराओं को अपने अन्दर समेटे हो (कोई साधक ईसाई धर्म में पले थे तो कोई ताओ परम्परा में; कोई इस्लाम को मानते थे, कोई बौद्ध धर्म को; फिर कोई नास्तिक थे, इत्यादि इत्यादि)? हरेक के लिए जरूरी था कि वह अपने सत्य की खोज आप करे, और वह समीपवर्ती दूसरे साधक का सत्य नहीं था। तप और त्याग के विषय में श्री अरविन्द ने इतना सब कह दिया था, तिस पर भी कुछ थे जो उसे ही श्रेष्ठ मानते थे और संन्यासियों-वैरागियों की तरह एकान्तवास करते थे। दूसरे जूदो अथवा फुटबॉल को अधिक पसंद करते थे। कोई पुस्तकें पढ़ना अच्छा समझते थे, कोई नहीं। कुछ लोग व्यापार में लगे हुए थे, स्टेनलेस स्टील का कारखाना चलाते थे, इत्र निकालते थे, नये ढंग की चीनी मिल में टनों चीनी भी बनाते थे। अपनी-अपनी रुचि के अनुसार सभी के लिए काम मौजूद था। जिसकी चित्रकला में अभिरुचि थी वह चित्र बनाता था, संगीतप्रेमी को भारतीय और पाश्चात्य, सभी वाद्ययंत्र प्राप्त थे। अध्यापनकार्य में जो रुचि रखता था, वह अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र में अध्यापक बन किंडरगार्टन से यूनिवर्सिटी स्तर तक पूरे क्षेत्र में विचरता था। इसके अतिरिक्त एक

www.the-comforter.org

मुद्रणालय था, प्रयोगशालाएँ थीं, फल-फूल के बगीचे थे, शाकवाटिकाएँ और धान्यक्षेत्र थे, निजी मोटर-गाड़ियों के लिए, ट्रैक्टरों और लॉरियों के लिए यंत्रालय थे। एक्स-रे और शल्यशाला थीं। सभी प्रकार के धंधे यहाँ चालू थे। यह एक छोटा-सा संसार था। मनुष्य नानबाई भी बन जा सकता था या फिर बरतन धोने का और बढ़ई का काम था, यदि इन साधारण कामों की ही उत्तमता में उसे विश्वास हो। और इस या उस काम से कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि न कोई काम धनोपार्जन का साधन होता था, न ही इनमें ऊँच-नीच का कोई भेद था। प्रत्येक की आवश्यकतानुसार श्री माँ सबको जीवन की समस्त साधन-सामग्री प्रदान करती थीं। वास्तविक कार्य केवल एक था -निज सत्ता के गुह्य तथ्य की खोज, जिसके लिए बाह्य था एक साधनमात्र। आश्चर्य यह था कि जैसे जैसे चेतना जगती जाती थी, बाहरी काम-काज में प्रायः फेर-बदल होती दिखाई देती थी। पिछले काम-धन्धों का सब महत्त्व कुछ काल बाद लुप्त हो जाता था, और धन का क्योंकि कोई मूल्य नहीं था, इसलिए जो व्यक्ति अपना कार्य चिकित्सा करना समझता था, अब अपने आपको शिल्पकार के रूप में अधिक अच्छा पाता था, और एक सामान्य मनुष्य के अन्दर सहसा चित्रकार या कवि खिल उठता था, या फिर वह संस्कृत अथवा आयुर्वेद के अध्ययन में लीन होने लगता था। एकमात्र आन्तरिक मापदण्ड से परिचालित हो बाह्य मूल्यों का आमूल परिवर्तन होता था। एक दिन एक शिष्य के श्री माँ से पूछने पर कि अतिमानसिक रूपांतरण में सहयोगी बनने का सबसे अच्छा तरीका क्या है,

www.the-comforter.org

उसे उत्तर मिला था-बात सदा एक वही है, अपनी आत्मा की उपलब्धि, चाहे वह किसी रूप में, किसी मार्ग द्वारा हो, उसका कोई महत्व नहीं पर तरीका केवल एक यही है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर एक सत्य को वहन कर रहा है, और उसे उस सत्य के साथ युक्त होना है, उस सत्य को अपने जीवन में चरितार्थ करना है। और इस प्रकार इस सत्य तक पहुँचने और उसे अधिगत करने के लिए वह जो मार्ग अपनायेगा, वही वह मार्ग होगा जो उसे इस रूपान्तर के अधिक से अधिक निकट ले जायेगा, अर्थात वैयक्तिक सिद्धि और रूपान्तर, दोनों सर्वथा संयुक्त है, एक ही है। कौन जाने? संभव है कि यह मार्गों की विभिन्नता ही हो जो उस परम रहस्य को प्राप्त कराये और द्वार खोले।

आन्तरिक संबंध के अतिरिक्त और कोई सामाजिक जीवन नहीं था। कुछ साधकों ने उस समय की पुरानी आदत बनाये रखी जब श्री माँ आश्रम के बच्चों के साथ बातचीत किया करती थीं, और वे सप्ताह में दो बार सामूहिक ध्यान के लिए एकत्रित होते थे। पर सबका सम्मिलन मुख्यतः होता था क्रीडा-क्षेत्र में (यों तो एक सामान्य भोजनालय भी था, किन्तु अधिकांश साधक, एकाकी अथवा सपरिवार, अपने निवासस्थान पर रसोई करना पसन्द करते थे)। परम्परागत हठयोगासन से लेकर टेनिस और बौक्सिंग तक सब प्रकार के खेलों तथा व्यायामों का प्रबन्ध था और प्रायः हर साधक प्रतिदिन एक-दो घण्टे इसको अर्पण करता था। समुद्र समीप था फिर भी तैरने के लिए ओलिम्पिक पैमाने का भव्य तालाब बनाया गया था।

बास्केट बॉल और बॉलीबॉल के लिए मैदान थे, दौड़ने के लिए पथ

www.the-comforter.org

बना हुआ था, जिम्नेजियम था, मुष्टि-युद्ध का हाता था, जूदो-भवन था, इत्यादि। पांच से लेकर पिचासी वर्ष तक की आयु के लोग सभी प्रकार के प्रचलित व्यायामों का अभ्यास करते थे। नाट्यशाला और चित्रपट भी थे। परन्तु क्रीड़ा योगसाधना का आवश्यक अंग नहीं थी और न ही कोई और चीज़। बल्कि मानव की दिव्य संभावनाओं में, और पृथ्वी पर एक अधिक सत्य जीवन में विश्वास आवश्यक था। श्री माँ ने आश्रम के नववयस्कों को सम्बोधन कर कहा था- मेरे बच्चों, तुम सब एक असाधारण स्वतंत्रता में रह रहे हो। यहाँ न कोई सामाजिक प्रतिबंध है, न नैतिक प्रतिबंध, न बौद्धिक प्रतिबंध और न ही कोई नियम है। एकमात्र पराज्योति यहाँ है। किन्तु इस ज्योति की माँग अत्यधिक कड़ी थी, और यहाँ पर समस्त पृथ्वी के लिए कार्य आरंभ हुआ।

प्रश्न उठता है कि बारह सौ साधकों को ले, अथवा चाहे एक लाख भी क्यों न हो, 'समस्त पृथ्वी' के कार्य की बात कैसे की जा सकती है? सो यह तो हम अभी स्पष्ट कर दें कि आश्रम इस कार्य का केवल एक संकेन्द्रण-स्थल था। वस्तुतः आश्रम संसार भर में, उन सभी स्थानों पर है जहाँ ऐसे लोग ही जिन्हें एक सत्यतर जीवन में विश्वास है, फिर चाहे उन्हें श्री अरविन्द के विषय में विदित हो अथवा नहीं। उनकी आन्तरिक प्रवृत्ति या उनका संकल्प एक ऐसी एकाग्रता अथवा आवश्यकता को प्रस्तुत करता है जिसके कारण आप से आप उनका शोधन की कुठाली में प्रवेश हो जाता है। रूपांतर किसी का विशेषाधिकार नहीं है, अपितु यह आवश्यक है कि बहुत से, अधिक से अधिक भिन्न प्रकार के लोग हों।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥७:२६॥

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥१५:७॥

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥१५:८॥

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥१८:६१॥

"कन फूंका गुरु हद का, बेहद का गुरु और।
बेहद का गुरु जब मिले, लगे ठिकाने ठौर॥"

"गुरु निर्गुण-निराकार का सगुण-साकार स्वरूप होता है।"
(समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी)

"ब्रह्मनिष्ठो वेधकरः शक्तिपातक्षमश्च गुरुः"
गुरु है जो ब्रह्मनिष्ठ, चक्रों का वेधन करने तथा शक्ति का संचारण व नियंत्रण करने में पूर्ण सक्षम हो।"

"सुप्त गुरु प्रसादेन यदा जाग्रति कुण्डली।
तदा सर्वाणी पद्मानि भिद्यन्ते ग्रन्थयोऽपि च"॥
जब गुरुकृपा से कुण्डलिनि जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का वेधन होता है।"

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

Appointments AUGUST

"जीवन का रहस्य"

मैं चेतना के सर्वोच्च शिखर से, अर्थात असीम ऊँचाई से नीचे की तरफ छिटका। एक आठ-नौ माह के बालक के रूप में ऊपर की तरफ मुँह किए बहुत लम्बे समय तक नीचे की तरफ चलता रहा। निरन्तर एक भय लग रहा था कि जमीन पर गिरते ही हड्डी-पसली चूर-चूर हो जावेगी इसलिए दोनों हाथ-पैरों को सिकोड़ कर दम साधे मौत के क्षण का इंतजार करता रहा। अचानक पाया कि मैं गुलाबी फूल के ऊपर जा कर गिरा। ऐसा लगा कि असीम वेग के साथ नीचे आते-आते वेग चीरे चीरे शान्त हो गया और मैं ऊपर की तरफ मुँह किये हुए ही गुलाबी फूल पर औंधा से लेट गया। तब शरीर को ढीला छोड़ कर चैन की साँस ली।

अभी-अभी थोड़े समय से अनुभव कर रहा हूँ कि मैं इस पार्थिव चेतना में बिल्कुल नया और अजीब प्राणी हूँ। मैं ने श्री अरविन्द दिव्य-रूपान्तरण को पढ़ा तो समझ में आया रहस्य क्या है? श्री अरविन्द ने इस सम्बन्ध में कहा है:—

"God - spirit meets "God - matter"

Divine Transformation:- "No more stomach, no more Heart, no more blood circulation, no more Lungs. all this will disappear and be replaced by a play of vibrations representing what these organs symbols of the centers of energy; they are not the Essential reality. They simply give it a form or support in certain given circumstance.

सन 1968-69 में मैंने सवा-लाख गायत्री मंत्रों का अनुष्ठान हर मंत्र के साथ "स्वाः" के साथ हवन कुण्ड में आहुतियाँ दे दे कर किया था। इसके बाद मुझे ध्यान के दौरान मेरे शरीर में दूधिया रंग का सफेद दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। इस प्रकाश में मुझे असीम शान्ति का अनुभव हुआ।

उस समय मुझे यही विचार आया था कि मेरे अन्दर यह प्रकाश के सिवा लीवर, तिल्ली, फेफड़े, हार्ट आदि कोई भी अंग दिखाई नहीं दे रहा है। जब मैंने इन अंगों को देखने का प्रयास किया तो उस प्रकाश में मुझे ॐ के गुंजन की ध्वनि सुनाई दी। जब मैं आवाज के केन्द्र बिन्दु तक पहुँचा तो पाया कि वह तो गायत्री मंत्र की ध्वनि थी, जो मेरी नाभि में अन्तर में से निरन्तर निकल रही थी।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

2/7/2003

Rosy Nabi, P.O. Box 39156
Tel-Aviv - 61391
(Israel) ~~61391~~

www.the-comforter.org

कहानी

सांसारिकता का मोह

एक बार गुरु वशिष्ठ से उनके एक शिष्य ने पूछा, 'गुरुदेव, सांसारिकता के मोह में फंसे संशयग्रस्त प्राणी क्यों नहीं उन्नति कर पाते ?'

वशिष्ठ ने शिष्य के प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक कथा सुनाई, 'आम के एक वृक्ष पर फलों का ढेर लगा हुआ था, पर एक पका आम वृक्ष में लगे रहने का मोह नहीं छोड़ पाया। पेड़ का रखवाला पके आमों की खोज करता हुआ वृक्ष पर चढ़ गया और सभी पके आम तोड़ने लगा, पर वह पका आम पत्तों की आड़ में ऐसा छिपा कि हाथ नही आया। रखवाला नीचे उतर गया। पका हुआ आम यह सब देखकर तरह-तरह के विचारों में खोया रहा।

दूसरे दिन उसने देखा कि उसके सभी पड़ोसी पके आम जा चुके थे। केवल उसी का मोंह नहीं छूटा था। अब उसे अपने मित्र आमों की याद सताने लगी। वह सोचता कि नीचे कूद जाऊं और अपने मित्रों से जा मिलूं। मगर फिर उसे पेड़ का मोह अपनी ओर खींचने लगता। आम इसी उधेड़बन में पड़ा रहा। संशय का यह कीड़ा उसे धीरे-धीरे खाने लगा। जल्दी ही आम सूखने लगा और एक दिन वह बस गुठली और सूखे छिलके के रूप में ही रह गया। अब उसकी तरफ कोई नहीं देखता था।

अपना आकर्षण खो देने के कारण आम पछताने लगा। वह सोचने लगा कि वह संसार की कोई सेवा भी नहीं कर सका और उसका अंत भी ऐसा दुखद होने वाला है। आखिर एक दिन हवा का झोंका आया और वह डाली से टूटकर नीचे गिर गया।

वत्स, संसार में रहने वाले प्राणियों का भी सांसारिकता से मोह नहीं छूटता। वे ज्ञानवान होकर भी यही सोचते रहते हैं कि अब निकलें तब निकलें और एक दिन ऐसा आता हैं कि उन्हें संसार छोड़कर जाना ही पड़ता हैं। भ्रम से ग्रस्त लोग उसी आम की तरह न इधर के रहते हैं न उधर के।' शिष्य को अपना उत्तर मिल गया।

सार यह है कि एक मात्र सद्गुरु ही शिष्य को सत्य के पथ पर अग्रसर कर, उनके सारे संशयों का निस्तारण करते हैं।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

दिव्य जन्म और दिव्य कर्म

-श्री अरविन्द

भगवान् अपनी विश्वव्यापकता में समस्त अवतारों, समस्त शिक्षाओं और समस्त धर्मों को लिए हुए हैं।

यह जगत् जिस युद्ध की रंगभूमि है गीता उसके दो पहलुओं पर जोर देती है, एक आंतरिक संघर्ष, दूसरा बाह्य युद्ध। आंतरिक संघर्ष में शत्रुओं का दल अन्दर, व्यक्ति के अपने अन्दर है, और इसमें कामना, अज्ञान और अहंकार को मारना ही विजय है। पर मानव-समूह के अन्दर धर्म और अधर्म की शक्तियों के बीच एक बाह्य युद्ध भी चल रहा है। भगवान्, मनुष्य की देवोपम प्रकृति और उसे मानव जीवन में सिद्ध करने का प्रयास करने वाली शक्तियाँ, धर्म की सहायता करती हैं। उद्दण्ड, अहंकार ही जिनका अग्रभाग है ऐसी आसुरी या राक्षसी प्रकृति, अहंकार के प्रतिनिधि और उसे सन्तुष्ट करने का प्रयास करने वालों को साथ लेकर अधर्म की सहायता करती है। यही देवासुर संग्राम है जो प्रतीक-रूप से प्राचीन भारतीय साहित्य में भरा है। महाभारत के महायुद्ध को, जिसमें मुख्य सूत्रधार श्रीकृष्ण हैं, प्रायः इसी देवासुर संग्राम का एक रूपक कहा जाता है; पांडव, जो धर्मराज्य की स्थापना के लिए लड़ रहे हैं, देवपुत्र हैं, मानवरूप में देवताओं की शक्तियाँ हैं और उनके शत्रु आसुरी शक्ति के अवतार हैं, असुर हैं। इस बाह्य संग्राम में भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करने, असुरों अर्थात् दुष्टों का राज्य नष्ट करने, उन्हें चलाने वाली आसुरी शक्ति का दमन करने और धर्म के पीड़ित आदर्शों को पुनः स्थापित करने के लिए भगवान् अवतार लिया करते हैं। व्यष्टिगत मानव-पुरुष में स्वर्गराज्य का निर्माण करना जैसे

www.the-comforter.org

भगवदवतार का उद्देश्य होता है वैसे ही मानव-समष्टि के लिए भी स्वर्गराज्य को पृथ्वी के निकटतर ले आना उनका उद्देश्य होता है।

भगवदवतार के आने का आंतरिक फल उन लोगों को प्राप्त होता है जो भगवान् की इस क्रिया से दिव्य जन्म और दिव्य कर्म के वास्तविक मर्म को जान लेते और अपनी चेतना में भगवन्मय होकर, सर्वथा भगवदाश्रित होकर रहते। (मन्मया मामुपाश्रिताः) और अपने ज्ञान की तपःशक्ति से पूत होकर (जानतपसा पूताः) अपरा प्रकृति से मुक्त होकर भगवान् के स्वरूप और स्वभाव को प्राप्त होते हैं (मद्भावमागताः)। मनुष्य के अन्दर इस अपरा प्रकृति के ऊपर जो दिव्य प्रकृति है उसे प्रकटाने के लिए तथा बंधरहित, निरहंकार, निष्काम, नैर्व्यक्तिक, विश्वव्यापक, भागवत ज्योति शक्ति और प्रेम से परिपूर्ण दिव्य कर्म दिखाने के लिए भगवान् का अवतार हुआ करता है।

भगवान् आते हैं दिव्य व्यक्तित्व के रूप में, वह व्यक्तित्व जो मनुष्य की चेतना में बस जायेगा और उसके अहंभावापन्न परिसीमित व्यक्तित्व की जगह ले लेगा जिससे कि मनुष्य अहंकार से मुक्त होकर अनन्तता और विश्वव्यापकता में फैल जाये, जन्म के पचड़े से निकलकर अमर हो जाये।

भगवान् भागवत शक्ति और प्रेम के रूप में आते हैं, जो मनुष्यों को अपनी ओर बुलाते हैं ताकि मनुष्य उन्हीं का आश्रय लें और अपने मानव संकल्पों को त्याग दें, अपने काम-क्रोध और भयजनित द्वन्द्वों से छूट जाए और इस महान् दुःख और अशांति से मुक्त होकर भागवत शान्ति और आनन्द में निवास करें।

अवतार किस रूप में, किस नाम से आवेंगे और भगवान् के किस पहलू को सामने रखेंगे, इसका विशेष

www.the-comforter.org

महत्त्व नहीं है। क्योंकि मनुष्यों की भिन्न-भिन्न प्रकृति के अनुसार जितने भी विभिन्न मार्ग हैं उन सभी में मनुष्य भागवान् के द्वारा अपने लिए नियत मार्ग पर चल रहे हैं, जो अन्त में उन्हें भगवान् के समीप ले जायेगा।

भगवान् का वही पहलू मनुष्यों की प्रकृति के अनुकूल होता है जिसका वे उस समय अच्छी तरह से अनुसरण करें जब भगवान् नेतृत्व करने आवें, मनुष्य चाहे जिस तरह भगवान् को अपनाते, उनसे प्रेम करते और आनन्दित होते हों, भगवान् उन्हें उसी तरह से अपनाते, उनसे प्रेम करते और आनन्दित होते हैं, 'ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्त थैव भजाम्यहम्'।२।

दिव्य जन्म को प्राप्त होना अर्थात जीव का किसी उच्चतर चेतना में उठकर दिव्य अवस्था को प्राप्त कराने वाले नवजन्म को प्राप्त होना और दिव्य कर्म करना, सिद्धि से पहले साधन के तौर पर और पीछे उस दिव्य जन्म की अभिव्यक्ति के तौर पर, यही गीता का संपूर्ण कर्मयोग।

गीता दिव्य कर्म के ऐसे बाह्य लक्षण नहीं बतलाती जिनसे बाह्य दृष्टि से उसकी पहचान की जा सके या लौकिक आलोचना-दृष्टि से उसकी जाँच की जा सके। सामान्य नीतिधर्म के जो लक्षण हैं जिनसे मनुष्य अपनी बुद्धि के अनसार कर्तव्याकर्तव्य निश्चित करते हैं उन लक्षणों को भी गीता ने जान-बुझकर त्याग दिया है। गीता जिन लक्षणों से दिव्य कर्म की पहचान कराती है वे अत्यंत निगूढ़ और अंतस्थ हैं; जिस मुहर से दिव्य कर्म पहचाने जाते हैं वह अलक्ष्य, आध्यात्मिक और नीतिधर्म से परे हैं।

दिव्य कर्म आत्मा से उद्भूत होते हैं

www.the-comforter.org

और केवल आत्मा के प्रकाश से ही पहचाने जा सकते हैं। ''बड़े-बड़े ज्ञानी मुनि भी, 'कर्म क्या है और अकर्म क्या है , इसका निश्चय करने में मोहित हो जाते हैं'', क्योंकि व्यावहारिक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक मानदण्ड से वे इनके बाह्य लक्षणों को ही पहचान पाते हैं, इनकी जड़ तक नहीं पहुँच पाते ;''मैं तुझे वह कर्म बतलाऊँगा जिसे जानकर तू अशुभ से मुक्त हो जायगा।

कर्म क्या है इसको जानना होगा, विकर्म क्या है इसको भी जानना होगा और अकर्म क्या है यह भी जान लेना होगा। कर्म की गति गहन है। संसार में कर्म जंगल-सा है, जिसमें मनुष्य अपने काल की विचार धारा, अपने व्यक्तित्व के मापदण्ड और अपनी परिस्थिति के अनुसार लुढ़कता-पुढ़कता चलता है; और ये विचार और मान उसके एक ही काल या एक ही व्यक्तित्व को नहीं, बल्कि अनेक कालों और व्यक्तित्वों को लिये हुए होते हैं, अनेक सामाजिक अवस्थाओं के विचार और नीति-धर्म तह-पर-तह जमकर आपस में विधे होते हैं और यद्यपि इनका दावा होता है कि ये निरपेक्ष और अविनाशी हैं फिर भी तात्कालिक और रूढ़िगत ही होते हैं, यद्यपि ये अपने को सयुक्ति की तरह दिखाने का ढोंग करते हैं पर होते हैं अशास्त्रीय और अयौक्तिक ही। इस सबके बीच सुनिश्चित कर्म-विधान के किसी महत्तम आधार और मूल सत्य को ढूंढ़ता हुआ ज्ञानी अंत में ऐसी जगह जा पहुँचता है जहाँ यही अंतिम प्रश्न उसके सामने आता है कि यह सारा कर्म और जीवन केवल एक भ्रमजाल तो नहीं है और कर्म को सर्वथा परित्याग कर अकर्म को प्राप्त होना ही क्या इस थके हुए, भ्रान्तियुक्त मानव-जीव के लिये अंतिम आश्रय नहीं है ?

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

01 जनवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, उत्तेसर, लूणी, जोधपुर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

02 जनवरी, 2022 कोटा रा. उ. मा. विद्यालय नया गांव के एनएसएस कैंप में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

02 जनवरी, 2022 कोटा स्थित रा. बा. उ. मा. विद्यालय दादाबाड़ी में आयोजित एनएसएस कैंप में सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

03 जनवरी, 2022 जवाहर लाल नेहरू रा. उ. मा. विद्यालय, भीमगंज मंडी, कोटा में सिद्धयोग कार्यक्रम।

03 जनवरी, 2022 महात्मा गांधी रा. उ. मा. विद्यालय (इंग्लिश मीडियम) राजनगर, राजसमंद में सिद्धयोग कार्यक्रम।

08 जनवरी, 2022 दस दिवसीय प्रधानाचार्य प्रशिक्षण शिविर डाइट, कोटा में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

12 जनवरी, 2022 जानकी देवी बजाज रा. महाविद्यालय, विवेकानंद जयंती और एनएसएस कैंप में सिद्धयोग कार्यक्रम।

13 जनवरी, 2022 रा. उ. मा. विद्यालय दादाबाड़ी कोटा में आयोजित संस्था विकास समिति की बैठक में सिद्धयोग कार्यक्रम।

14 जनवरी, 2022 मकर संक्रांति पर्व पर रा. उ. मा. विद्यालय मलार पीपाड़ शहर, जोधपुर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

15 जनवरी, 2022 श्री देव दूध डेयरी ग्राम सिलोर, जिला- बूंदी में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

19 जनवरी, 2022 स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन महावीर नगर तृतीय, कोटा में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

23 जनवरी, 2022 राजकीय महाविद्यालय, कोटा में सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर एनएसएस कैंप में सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

25 जनवरी, 2022 राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर रा. बालिका महाविद्यालय बारां के एनएसएस कैंप में सिद्धयोग कार्यक्रम।

27 जनवरी, 2022 श्रीगंगानगर स्थित तपोवन नशामुक्ति एवं पुर्नवास संस्थान में सिद्धयोग कार्यक्रम।

28 जनवरी, 2022 सवाई माधोपुर जिले के विभिन्न विद्यालयों में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

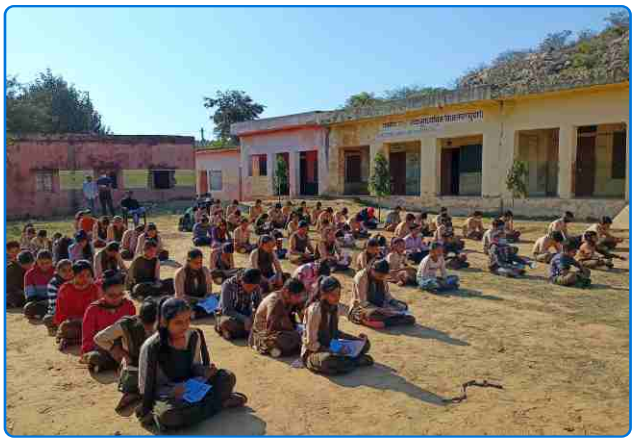

28 जनवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रघुंवशी, जिला- करौली में सिद्धयोग कार्यक्रम।

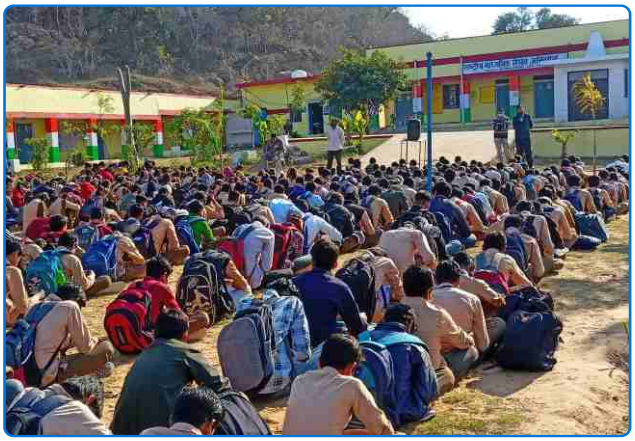

28 जनवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, परीता, जिला- करौली में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 जनवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रायपुर, जिला- सवाई माधोपुर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

29 जनवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मैड़ी, जिला-सवाई माधोपुर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 जनवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, फुलवाड़ा, पैपट, जिला-सवाई माधोपुर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 जनवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रावतभाटा, जिला चित्तौड़गढ़ में सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

31 जनवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वजीरपुर, सवाई माधोपुर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

31 जनवरी, 2022 ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल, श्यारौली, गंगापुर सिटी में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

31 जनवरी, 2022 ज्ञानदीप राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्यारौली, गंगापुर सिटी में सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

31 जनवरी, 2022 जेके टायर प्लांट कांकरोली राजसमंद में आयोजित ट्रैनिंग प्रोग्राम के दौरान सिद्धयोग कार्यक्रम।

31 जनवरी, 2022 प्राइवेट उच्च प्राथमिक विद्यालय, ठाकरियावास, डीडवाना, नागौर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

31 जनवरी, 2022 राजकीय संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, ठाकरियावास, डीडवाना, नागौर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

जनवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

31 जनवरी, 2022 स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन, छावनी कोटा में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रम।

31 जनवरी, 2022 स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन, शोपिंग सेंटर कोटा में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

भीतर से अचंचल बने रहना, बाधा विपत्ति या उत्थान-पथन से विचलित या निरुत्साहित न हो, पथ पर चलने के अपने संकल्प में दृढ़ बने रहना- यही वह पहली बात है जिसे इस योग मार्ग में सीखना होता है।

-श्री अरविन्द

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

प्रत्येक संसारी मनुष्य जगत् में उसी प्रकार उलझा होता है, जिस प्रकार किसी जन्म में लल,जगत् के प्रति पूर्णरूप से आसक्त थी। उस समय उसे जगत् भोगों, विषयों, सुविधाओं के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता था। यदि उस स्थिति में से निकलकर वह इस स्थिति में आ सकती है तो विषयासक्त अन्य जीव क्यों नहीं? क्या इसके लिए उन्हें किसी अन्य से अनुमति लेने की आवश्यकता है? क्या उनके शरीर में रुधिर प्रवाहित नहीं होता? या उनके श्वास-प्रश्वास की गतिशीलता बन्द हो गई है? विघ्न-बाधाएँ सभी साधकों के सामने आती हैं। यह बाहर से नहीं अन्तर से प्रकट होती हैं। उनका सामना करना, सहन करना, धैर्य रखना, आगे बढ़ना, यह प्रत्येक् जीव का अधिकार भी है तथा कर्तव्य भी। मनुष्य को केवल, जगत से हटा कर, अध्यात्म की ओर मुँह घुमाना है। जिधर उसका मुँह होगा उधर ही चलने लगेगा। अध्यात्म में आगे बढ़ने के लिए समय लगता ही है। यदि कोई चलेगा नहीं तो पहुँचेगा कैसे? इसलिए तुम्हारा यह सोचना कि लल के समान आध्यात्मिक ऊँचाई नहीं छू सकते, उचित नहीं। सभी जीव इसके सर्वथा योग्य तथा अधिकारी हैं।

तुम्हारा अगला प्रश्न लल की शक्ति-जाग्रति के विषय में है। जिन लेखकों तथा इतिहासकारों ने लल के बारे में लिखा है वह उतना ही है जितनी कि उनको जानकारी थी। लल ने

www.the-comforter.org

किस-किस जन्म में क्या-क्या साधना की? कैसी-कैसी परिस्थितियों में से होकर उसे निकलना पड़ा, कौन सी पगडण्डियों पर वह आगे बढ़ती रही, उसकी आन्तरिक साधना क्या थी, उसे कब-कब क्या-क्या अनुभूतियाँ हुई, इन सभी बातों से लेखक अनभिज्ञ होता है। उसकी जानकारी अत्यन्त सीमित होती है। सभी महात्माओं की जीवनियों के साथ यही समस्या है। इतिहासकार किसी राजा या नेता के बारे में अधिक लिख सकता है क्योंकि उनका अधिकांश जीवन भौतिक स्तर पर होता है किन्तु एक महात्मा का वास्तविक जीवन अन्तर में घटित होता है तथा यह आन्तरिक जीवन लेखक की दृष्टि में नहीं आ पाता।

लल एक अत्यन्त गंभीर महिला थी। वह अपने विषय में किसी को कुछ भी नहीं बताती थी। यदि वह हिंसक पशुओं से भरे भयानक वन में, बरसती बरसात में किसी पर्वत-शिखर पर, या रात के सन्नाटे में किसी अंधियारी गिरिकन्दरा में, संसार की नज़रों से दूर, किसी महापुरुष को मिली तो किसी को इसका क्या पता? उसने कब, किस महापुरुष से, कहाँ आशीर्वाद लिया, कब उस पर किस महात्मा की कृपा हुई, किसके साथ उसने साधन-सत्संग किया, इसकी जानकारी जगत् को कैसे प्राप्त हो सकती है? साधना में उसको कहाँ-कैसा अनुभव हुआ, किस समय उसकी मानसिक अवस्था कैसी थी, किसी महापुरुष को मिलकर, उसके मन पर कैसी प्रतिक्रिया हुई, कौन से अनुभव या घटना ने उसका जीवन बदल दिया आदि बतलाने पर ही किसी को ज्ञात हो सकती हैं। यदि तथ्यों की जानकारी के अभाव में कोई लेखक कुछ लिखेगा तो वह उसकी कल्पना होगी, या भावना, अथवा सुनी-सुनाई बातें। लल को अपने जीवन में घटनाएँ उजागर करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उसे उन्हें प्रचारित तो करना नहीं था। जन-समाज के पास उन घटनाओं के बारे में जानने का कोई

www.the-comforter.org

उपाय नहीं था। लेखक तो अपनी साहित्य-सृजन की भूख मिटाने के लिए लिखता है।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि लल भी शक्तिपात् में दीक्षित थी, उसके गुरु स्वामी परमानन्द तीर्थ महाराज थे।

इसपर मैंने पूछा- यह स्वामी परमानन्द तीर्थ महाराज कौन थे। ध्यान में नहीं आ रहा पर नाम सुना हुआ है।

महाराजश्री- अरे तुम भूल गए, स्वामी गंगाधर तीर्थजी महाराज के परम गुरुदेव। गंगाधर तीर्थ जी के गुरु स्वामी मुकुन्द तीर्थ महाराज तथा मुकुन्द तीर्थ जी के गुरु स्वामी परमानन्द तीर्थजी महाराज।

इस पर मुझे अपनी भूल का आभास हुआ। मैं कुछ झेंप सा गया। थोड़ा मौन रहा। फिर पूछा, 'क्या स्वामी गंगाधर तीर्थ महाराज की भाँति स्वामी परमातीर्थ महाराज भी एकान्तप्रिय थे?'

महाराजश्री- उनको भी तथा स्वामी मुकुन्द तीर्थ महाराज, दोनों को एकांत प्रिय था। उस समय शक्तिपात् विद्या का गुप्तकाल चल रहा था। जन-समाज शक्तिपात् से अनभिज्ञ था। कहीं-कहीं पुस्तकों में, पढ़ने को, इसका उल्लेख मिल जाता था किन्तु कोई-कोई महापुरुष शक्तिपात् विद्या की मशाल कसकर थामे हुए थे। वे संसार की नज़रों से बचकर पर्वतों, रेगिस्तानों, पुराने खण्डहरों तथा कन्दराओं जैसे दुर्गम स्थानों पर रहकर, साधनरत् थे। स्वामी परमानन्द तीर्थ महाराज भी ऐसे ही एक महापुरुष थे। वह लल के इस जन्म के गुरु ही नहीं थे, अपितु कई जन्मों से इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करते आ रहे थे।

यह सुनकर मेरा मस्तिष्क घूम गया। मैंने पूछा, ''जब अन्य किसी को इस बात का पता नहीं तो आपको कैसे है?''

महाराजाश्री- अनुभव से। मैंने इस बात को प्रत्यक्ष अनुभव किया है। स्वामी परमानन्द तीर्थ महाराज से लल की दीक्षा होते प्रत्यक्ष देखा है। एक

www.the-comforter.org

पहाड़ी नदी के किनारे, एक चट्टान की ओट में, सुनसान-वीरान जगह पर, परमानन्द तीर्थ महाराज की कुटिया। महाराज के समक्ष आसन जमाए लल। दृष्टि-दीक्षा। सब कुछ प्रत्यक्ष देखा है।

मैंने कहा- यह आप की कल्पना का साकार-रूप भी हो सकता है।

महाराजश्री- उस समय मेरी ऐसी कुछ कल्पना थी ही नहीं। यह शक्ति की सूचनात्मक दृश्य-दर्शन क्रिया थी। हाँ ! उस समय मुझे लल का ध्यान अवश्य था, जिसमें मुझे उसकी दीक्षा का दृश्य दिखाई दे गया।

मैंने कहा- "आपने बताया कि किसी पूर्व जन्म में स्वामी परमानन्द तीर्थ महाराज लल को शक्तिपात् दीक्षा दे चुके थे। फिर इस जन्म में पुनः दीक्षा की क्या आवश्यकता थी ?"

महाराजश्री- इस जन्म का व्यवहार था अन्यथा परमानन्द तीर्थ महाराज कई जन्मों से लल के गुरु थे। फिर यह बात भी है कि कभी-कभी कोई विघ्न उपस्थित होकर साधन की गति को अवरुद्ध कर देता है तब जाग्रत-शक्ति को एक और धक्के की आवश्यकता होती है। वास्तव में दूसरी दीक्षा को दीक्षा कहना उपयुक्त नहीं। इसे जाग्रत शक्ति का दिशा-परिवर्तन अथवा अनुशासित करना कहा जा सकता है। लल की यह दूसरी दीक्षा, शक्ति-जागृति हेतु नहीं थी। लल की आन्तरिक चेतन-शक्ति पहले ही जाग्रत थी तथा कई पड़ाव पार कर चुकी थी। किन्तु अत्यन्त सूक्ष्म स्तर पर लल के मार्ग में कोई ऐसा व्यवधानात्मक संस्कार आ गया था जिसके कारण वह आगे नहीं बढ़ पा रही थी। उस व्यवधान को दूर करने के लिए एक और उच्च स्तरीय गुरु कृपा की आवश्यकता थी।

सामान्यतया साधक स्थूल व्यवधानों में ही उलझे रहते हैं। सूक्ष्म व्यवधानों की न उन्हें कल्पना ही होती है तथा न समझ ही। सूक्ष्म व्यवधानों की सूक्ष्म-शक्ति, स्थूल-व्यवधान की अपेक्षा अनन्त गुणा अधिक होती है। उस व्यवधान को दूर करने के लिए साधक के पास गुरु कृपा के अतिरिक्त

www.the-comforter.org

कोई उपाय भी नहीं होता। प्रभु-कृपा ही गुरु कृपा के माध्यम से प्रकट होती है। यही लल की समस्या थी, जिसे परमानन्द तीर्थ महाराज ने अपनी अहैतुकी कृपा से, लल का रोम-रोम भिगो दिया। वह कृतकृत्य हो उठी। जन्म-जन्मान्तर के संशय निवृत्त हो गए। चित्त में बाकी बची माया की सभी गांठें खुल गईं।

कुछ देर इसी प्रकार की चर्चा चलती रही। स्टेशन आते, गाड़ी रुकती, लोगों की आवाजें बहुत बढ़ जाती। हमारी चर्चा को भी कुछ विराम लग जाता। फिर गाड़ी आगे सरकने लगती, हमारी चर्चा फिर होने लगती। मैंने कहा - "क्या आपको कभी लल के दर्शन होते हैं?"

महाराजश्री- मुझे जब पहले-पहल लल विषयक पुस्तक मिली तथा उसे पढ़ने के उपरान्त उसके संबंध में भावना उदय हुई तो मानो उस बात ने पूर्व संस्कारों को, प्रसुप्त पड़े संस्कारों को उदार बना दिया। तब साधन में मुझे लल के दर्शन भी होने लगे तथा उसके जीवन तथा पूर्व जन्मों में घटित घटनाएँ भी अनुभवों में सजीव होने लगीं। अब तुम मेरे साथ प्रवास में आए हो तो तुम्हारे मन में लल को लेकर कुछ विचार उमड़-घुमड़ रहे थे जिससे मेरा मन भी प्रभावित हुए बिना रह न सका तथा मुझे निरन्तर लल के दर्शन होते रहे। देवास से लेकर नागदा तक लल भी हमारे साथ ही यात्रा करती रही थी। इसलिए मैं अत्यन्त गंभीर बना था।

उज्जैन में स्टेशन पर, गाड़ी से बाहर निकल कर लोगों से चर्चा कर रहा था, तब लल भी मेरे साथ बाहर निकलकर मेरे साथ ही खड़ी थी। नागदा में उसने कहा कि अब वह विदा लेती है।

www.the-comforter.org

मैंने कहा-''लल के केवल दर्शन ही होते रहे कि उसने कोई बात भी की?''

महाराजश्री- उसने बात भी की। कहा कि पहले वह भी तुम्हारी तरह आध्यात्मिकता की कठिनाइयों को देखते हुए, इस ओर पग बढ़ाने में हिचकती रही, किन्तु जब एक बार इस मार्ग पर चल पड़ी तो अनुभव किया कि जैसे कोई मेरा हाथ पकड़कर मुझे लिए जा रहा है। कभी ठोकर लग जाती है तो मुझे संभाल लेता है। जब तक जीव को अपने पुरुषार्थ का भरोसा होता है, उसके मन में संशय, भय एवं संकोच बने रहते हैं। किन्तु यह अनुभव होते ही कि मुझे किसी अदृश्य शक्ति ने थाम रखा है, पुरुषार्थ का भय, संशय, संकोच एवं गर्व सब भाग निकलते हैं।

अपनी शक्ति से चलना तथा ईश्वर के प्रति समर्पित होकर, ईश्वर की शक्ति से चलने में यही अन्तर है। किन्तु जीव का अहंभाव इतना दृढ़ हो चुका है कि वह उसे ईश्वरसत्ता के अनुभव करने तथा उसके प्रति समर्पित होने से, बार-बार रोक देता है। जीव के मन के सभी संशय, भय, भ्रम एवं भ्रान्तियाँ उसके अहंभाव का ही प्रतिफल है। यदि जीव का लक्ष्य अध्यात्म के प्रति बना रहे तो यथा समय सब ठीक होता जाता है।

मैंने कहा-''जिस जन्म में लल एक साधारण विषयी एवं कामासक्त नारी थी, उससे पूर्व जन्मों में भी, संभव है, वह एक उच्च कोटि की साधिका रही हो तथा प्रारब्धवश उसे सामान्य विषय-ग्रस्त नारी में जन्म ग्रहण करने पर विवश होना पड़ा हो।''

महाराजश्री- ''तुम्हारा सोचना ठीक है। वास्तव में ही लल कई जन्मों से अध्यात्म-पथ पर आरूढ़ थी। उत्थान-व्युत्थान का क्रम चलता रहता था। कभी अध्यात्म से बहुत दूर निकल जाती तथा कभी अध्यात्म-रूप हो जाती थी। तभी एक जन्म में स्वामी परमानन्द तीर्थ महाराज, जो कि उस समय नीलकण्ठ स्वामी के नाम से विख्यात थे, से लल की शक्तिपात्

www.the-comforter.org

दीक्षा भी हो गई थी। दीक्षा के पश्चात उसका संचित तथा प्रारब्ध संस्कारों का भण्डार तीव्रता पूर्वक उदार हो उठा। एक के पश्चात् एक प्रारब्ध कर्म, फलरूप धारण कर, लल के समक्ष उपस्थित होकर, क्षीण होने लगा।

लल बड़ी जल्दी-जल्दी अध्यात्म की सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। यह समय साधक के लिए, बड़ा संभलकर रहने का होता है। चैतन्य-शक्ति की क्रिया के रूप में, संचित एवं प्रारब्ध संस्कारों ने चित्त में उदार-स्थिति में चित्त को तरंगित किया है तो वासना के क्रियात्मक वेग को, बड़े-बड़े साधकों के लिए झेल पाना भी सरल नहीं। ऐसे में साधन-पथ से लुढ़क जाने की पूरी संभावना होती है। लल भी प्रारब्ध कर्मों के क्रियात्मक फल-प्रवाह का सामना करने में असमर्थ रही तथा वासना के प्रबल-वेग में गोते खाने लगी। उसके प्रारब्ध ने लल को एक ऐसे शरीर में स्थापित कर दिया जहाँ वह साधन, अध्यात्म, सत्कर्मों से एकदम उदासीन तथा विषय-वासनाओं, आसक्ति मूलक सुविधाओं तथा संसार की रंगीलियों के प्रति एकदम आसक्त तथा समर्पित थी। यही कारण है कि जब उसे विवेकयुक्त ठोकर लगी, उसकी पुरानी स्थिति में उभार आया तथा उसकी पूर्व चित्त-भूमिका लौट आई तथा उसे अपने आप को भजन-भाव में लगाने, अध्यात्म-पथ पर आरूढ़ करने में तथा सांसारिक वृत्तियों को उतार फैंकने में कोई कठिनाई नहीं आई। उस के गुरुदेव भी, जो कि उस की प्रत्येक् गतिविधि तथा परिस्थिति पर दृष्टि जमाए थे, प्रकट हो गए। उसने फिर से अपना कदम आध्यात्मिक लक्ष्य-प्राप्ति की दिशा में उठा लिया।

वह एक के पश्चात् एक जन्म में, एक के पश्चात् एक पड़ाव पार करती चली गई। धीरे-धीरे उसका मन निर्मलता धारण करता चला गया एवं वह उच्च पारमार्थिक भूमिका प्राप्त कर सकी।''

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

अब रही प्रभुत्व स्थापित करने की पद्धति की बात। यह कार्य केवल शारीरिक संयम के द्वारा नहीं किया जा सकता-यह सिद्ध होता है अनासक्ति और त्याग की सम्मिलित प्रक्रिया के द्वारा। चेतना कामावेग से अलग हटकर खड़ी हो जाती है, यह अनुभव करती कि वह वृत्ति उसकी अपनी नहीं है, बल्कि एक ऐसी विजातीय वस्तु है जिसे प्रकृति-शक्ति ने उसके ऊपर फेंक दिया है और जिसे वह सम्मति देना या जिसके साथ तादात्म्य स्थापित करना अस्वीकार करती है। इस तरह जब-जब चेतना कामावेग का त्याग करती है तब-तब वह अधिकाधिक बाहर का भी निक्षिप्त होता है। धीरे-धीरे मन निर्लिप्त हो जाता है। फिर कुछ समय बाद प्राणमय सत्ता भी, जो उसका प्रधान आधार है, उससे उसी प्रकार पीछे हट जाती है और अंत में शरीर चेतना भी उसे अब आश्रय नहीं देती।

यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि अवचेतना भी उसे खनके अंदर जागृत करने में असमर्थ नहीं हो जाती और इस निम्न अनि को फिर से सुलगाने के लिये कभी कोई आवेग बाहरी प्रकृति शक्ति से नहीं आता। यह प्रक्रिया तभी लागू होती है जब कि कामप्रवृत्ति बुरी तरह जगह जमाये बैठी होती है। अन्यथा कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो इसे अपनी प्रकृति से शीघ्र और समूल निकालकर पूर्ण रूप से इसे दूर कर सकते हैं। पर ऐसा करने वाले विरले ही होते हैं।

अवश्य ही यह तो कहना ही होगा कि कामप्रवृत्ति को पूर्ण रूप से दर करना साधना की सबसे कठिन चीजों

www.the-comforter.org

में से एक है और इस कार्य में जो समय लगता है उसे देने के लिये साधक को तैयार रहना चाहिये। परंतु इसका पूर्ण तिरोभाव सिद्ध किया जा चुका है और ऐसे लोग तो काफी अधिक संख्या में मिलते हैं जिन्होंने कार्यतः इससे एक प्रकार की मुक्ति पा ली है जो केवल कभी-कभी अवचेतना से उठने वाली स्वप्न की क्रियाओं के द्वारा ही खंडित होती है।

अब कामावेग की बात पर आवें। तुम उसे कोई ऐसी वस्तु मत समझो जो पापमय और भयंकर हो और साथ ही आकर्षक भी; बल्कि उसे निम्न प्रकृति की एक भूल और भ्रांत गति समझो। उसका पूर्ण रूप से त्याग करो, पर उसके साथ संघर्ष करके नहीं, बल्कि उससे पीछे हटकर, अनासक्त होकर और उसे अपनी सम्मति देना अस्वीकार करके; उसकी ओर इस प्रकार देखो मानों वह चीज तुम्हारी अपनी नहीं है, बल्कि तुमसे बाहर रहने वाली प्रकृति की एक शक्ति ने उसे तुम्हारे ऊपर लाद दिया है। इस लादने की क्रिया को सम्मति देना एकदम अस्वीकार करो। अगर तुम्हारी प्राण-सत्ता का कोई अंश उसे स्वीकार करे तो तुम अपने उस भाग पर अपनी सम्मति हटा लेने के लिये जोर डालो। इस प्रकार अपने-आपको पीछे हटाने और अस्वीकार करने के कार्य में सहायता देने के लिये तुम भागवत शक्ति को पुकारो। अगर तुम इसे शांति के साथ और दृढता तथा धैर्यपूर्वक कर सको तो अंत में बाह्य प्रकृति की इस आदत के ऊपर तुम्हारे अंदर संकल्प की विजय होगी।

इतना अधिक उदास हो जाने अथवा योग में विफलता होगी, इस तरह की कल्पनाएँ करने का कोई

www.the-comforter.org

कारण नहीं। यह इस बात का बिल्कुल चिह्न नहीं कि तुम योग के लिये अयोग्य हो। इसका मतलब बस इतना ही है कि सचेतन भागों से त्यक्त होकर कामावेग ने अवचेतना के अंदर आश्रय ग्रहण किया है। संभवतः निम्नतर प्राणमय-भौतिक चेतना और नितांत भौतिक चेतना के अंदर कहीं पर आश्रय ग्रहण किया है, जहाँ कुछ ऐसे स्थान हैं, जो अभी तक अभीप्सा और ज्योति की ओर खुले नहीं हैं।

जाग्रत चेतना में से निकाल दी गयी चीजें स्वप्न में बार-बार आती हैं और यह साधन-काल में होने वाली एक बिल्कुल साधारण बात है।

क्रमशः...

www.the-comforter.org

बवासीर से निजात

मुझे काफी समय से बवासीर था। काफी इलाज करवाया लेकिन कुछ समय तक आराम रहता फिर वापस दिक्कत होने लग जाती। इसकी वजह से अच्छे से खाना भी नहीं खा पाती मतलब थोड़ा तीखा, चाय आदि इनमें दिक्कत आती थी। एक बार ऑपरेशन भी करवाया, लेकिन इतना आराम नहीं आया।

हमारे गांव पलसावा में गुरुदेव सियाग सिद्ध योग को करते हुए काफी लोगों को अलग अलग बीमारियों में आराम मिला और मेरी छोटी बहन (धनकवर) को भी अस्थमा जैसी बड़ी बीमारी में गुरुदेव का ध्यान करने से बहुत ज्यादा आराम मिला।

इन सबको देखते हुए, मैने भी गुरुदेव सियाग सिद्धयोग को करना शुरु कर दिया। नियमित अभ्यास के चलते मुझे भी आराम मिला और आज गुरुदेव की कृपा से, मैं बवासीर जैसी बड़ी बीमारी से पूर्ण रूप से ठीक हूँ। अगर गुरुदेव मेरा हाथ नहीं पकड़ते तो पता नहीं क्या हो जाता !

देखो, सभी से मेरा निवेदन है कि इस सिद्ध योग में हमारा कुछ नहीं लगता, इसमें किसी भी प्रकार के कर्म कांड करने की जरूरत नहीं है, ये पूरी तरह से निः शुल्क है इसलिए सभी को इस सिद्ध योग को करना चाहिए।

– गुड्डी बाई मीना
ग्राम –पलसावा,
जिला–बारां, राजस्थान

www.the-comforter.org

आंतों की बीमारी से निजात

- सुन्दर और फलते फूलते बगीचे को कब कोई उजाड़ दे, कब अंधड़ और तेज बारिश के असहनीय झोंकों से उजड़ जाये, कुछ पता नहीं। मनुष्य जीवन भी उस बगीचे के समान है जिसमें कब पीड़ा और असहनीय दर्द आ दबोचे कुछ पता नहीं। ऐसी ही पीड़ादायक कहानी है बिहार के छप्परा जिले के निवासी श्री जयसिंह यादव की।
- –डॉक्टर की गलती से दवाईयाँ और इन्जेक्शन का रिएक्शन हुआ –आंतों का सूखना। उसकी वजह से लेट्रिंन आना बन्द हो गई। –धीरे धीरे आवाज आना बंद हो गई।
- –पेट के भीतर असहनीय दर्द रहने लगा। –कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।
- –मान बना लिया कि अब केवल आत्महत्या ही एकमात्र हल है।
- –ऐसा विचार करके एक दिन ट्रेन के आगे कूदना, लेकिन रहस्यमय तरीके से बच जाना।
- –वाराणसी (उ.प्र) में कई डॉक्टरों से इलाज कराया, लेकिन कोई खास फर्क नहीं पड़ा।
- –उत्तरप्रदेश पुलिस में सेवारत मेरे मामाजी ने मुझे पूज्य गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग दर्शन के बारे में बताया।
- –संजीवनी मंत्र के सघन जप और सुबह शाम 15–15 मिनट नियमित ध्यान करने से जीवन सुखमय और आनंदमय बन गया।
- आज पूर्णतः स्वस्थ और आनंदमय जीवन है – ये है गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का कमाल !

www.the-comforter.org

मेरा नाम जय सिंह यादव है। मैं छपरा (बिहार) का रहने वाला हूँ। दो साल पहले 24 जून को डॉक्टर की गलती से दवा का रियेक्शन हुआ। ऊपर से डॉक्टर ने 2 इंजेक्शन और लगा दिए। नतीजा ये हुआ कि मेरी आंते सूख गई और लेट्रिंन आना ही बंद हो गया।

घर वालों को बताया तो विश्वास नहीं हुआ कि ऐसा कैसे संभव है, कि भोजन लेने के बाद भी तुम्हारा लेट्रिंन नहीं हो रहा, इस तरह से काफी दिनों में एक बार होता था, और इस दर्द को मैं 4 महीने तक सहता रहा, धीरे धीरे मेरी

आवाज भी आना कम हो गई, मुझसे ये स्थिति सहन नहीं हो रही थी। मैंने सुसाइड (आत्महत्या) करने का सोचा और ट्रेन के आगे कूद गया, लेकिन गुरुदेव को कुछ और ही मंजूर था। थोड़ी चोट लग गई लेकिन मैं बच गया। फिर मेरे मामाजी ने मुझे वाराणसी में बहुत सारे डॉक्टरों को दिखाया। थोड़ा सा सुधार हुआ। फिर मेरे मामाजी ने 'गुरुदेव के दर्शन' की जानकारी दी और बोले कि इस मंत्र से सारी बीमारियाँ ठीक हो जाती है।

फिर मैंने गुरुदेव का मंत्र जाप और ध्यान लगातार किया, इसका परिणाम ये हुआ कि मुझे जो समस्या थी वो एक महीने में बिल्कुल ठीक हो गई। आज मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ, नहीं तो मैने तो सुसाइड भी करने की पूरी कोशिश की थी लेकिन कहते है ना- 'जाको राखे साइयां मार सके ना कोई। बाल न बांका कर सके, जो जग बैरी होई।'

संत कबीरदास जी ने यह सत्य कहा है कि यदि भगवान की छत्रछाया में कोई आत्मा है तो पूरा जगत ही चाहे अपना दुश्मन क्यों न हो, पर उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

15 दिन तक लेट्रिंन नहीं आना और आवाज कम होना जैसी भयानक बीमारी से कल्कि भगवान् ने मुझे बचा लिया। सच में हमारे गुरुदेव जैसा कोई नहीं है।

इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि इस सिद्धयोग को आप खुद भी करें और सभी को इस सिद्धयोग की जानकारी दें,ताकि जैसे हमारा भला हुआ है ठीक वैसे ही सभी का भी हो। पूरी मानव जाति का कल्याण इस सिद्ध योग से हो, इसलिए सभी को गुरुदेव के दर्शन की जानकारी दे।

ऐसे पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि कोटि नमन् कोटि कोटि वन्दन।

-जयसिंह यादव
छपपरा, बिहार

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की कृपा से एक सप्ताह में डिप्रेशन से मुक्ति।

मेरा नाम स्तुति है और मैं पटना की रहने वाली हूँ। नवम्बर 2019 में डिप्रेशन का शिकार हुई जिसके कारण मैं अपने को असहाय महसूस करने लगी। मुझमें जीने की इच्छा खत्म हो गई। किसी भी कार्य में मन नहीं लगता था। दिनभर कमरे में रहती थी, कम्बल के अन्दर क्योंकि मैं रोशनी भी नहीं देखना चाहती थी। भूख तो बिलकुल नहीं लगती थी। मन हमेशा उदास रहता था। मेरी माँ मेरी यह हालत देखकर बहुत चिंतित थीं।

यूट्युब पर डिप्रेशन का समाधान देखते हुए हमें गुरुजी का वीडियो मिला। मैं साईकेट्रिस्ट (डॉक्टर) के पास जाने वाली थी पर जब गुरुजी का वीडियो देखा तो सोचा पहले इनका बताया हुआ मंत्र जाप और ध्यान करके देखती हूँ। 05 जनवरी 2020 को मैंने सुबह-शाम ध्यान करना शुरू किया। ध्यान करने का मन नहीं होता था फिर भी जबरदस्ती खुद को किसी तरह ध्यान के लिए राजी करती थी और ध्यान के लिए बैठती थी और गुरुदेव से प्रार्थना करती थी। मेरे आज्ञाचक्र पर भारी सा दबाव जैसा महसूस होना शुरू हो गया और एक सप्ताह में मेरा डिप्रेशन गुरुदेव की कृपा से ठीक हो गया। यह मेरे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था।

बस पूर्ण समपर्ण और प्रेम की जरूरत है। सच्चे दिल से अगर गुरुदेव से मदद मांगोगे तो वह अवश्य मदद करेंगे पर मंत्र जाप और ध्यान करते रहना होगा।

– नाम– स्तुति
पिता का नाम– विजय कुमार
पटना, बिहार

www.the-comforter.org

डिप्रेशन, पागलपन से 12 दिनों में मुक्ति

मेरा नाम प्रतीक कुमार जोशी (पुत्र श्री महेन्द्र प्रसाद) है। मैं देभारी गाँव, महीसागर, गुजरात का रहने वाला हूँ। पहले मैं एकदम स्वस्थ था लेकिन नशा छुड़वाने वाली दवाओं के कारण पागल और भ्रमित सा हो गया। मन अस्थिर रहता था और हर समय मानसिक तनाव रहता था। मन किसी काम में नहीं लगता था। चिड़चिड़ापन रहता था और विचार बहुत आते थे। जिन्दगी से पूरी तरह परेशान हो चुका था। बेचैनी रहती थी, समय काटे नहीं कटता था। लोगों की बातें जल्दी समझ में नहीं आती थीं। मन में बहुत घबराहट रहती थी और आत्मविश्वास पूरी तरह खत्म हो चुका था। सारा दिन उदास रहता था। मन सुन्न हो गया था और सूसाइड करने का खयाल आता था।

फिर यूट्युब पर गुरुदेव के बारे में पता चला। संस्था से मंत्र जाप और ध्यान की सारी जानकारी प्राप्त की। तब भी मेरे मन में सवाल था कि मैं ठीक हो पाऊंगा या नहीं? मेरे मन में मंत्र के प्रति विश्वास नहीं था फिर भी मैंने मंत्र जाप और ध्यान करना शुरू किया।

जब मैंने मंत्र जाप करना शुरू किया तो दो-तीन दिन में ही फरक पड़ना शुरू हो गया। अच्छे विचार आने लगे मन खुश रहने लगा और तनाव कम होने लगा। मन में यह भाव भी आया कि कहीं फिर से पहले जैसा नहीं हो जाऊँ। फिर धीरे-धीरे मंत्र जाप में मेरा मन लगने लगा। अब मुझे नींद अच्छी आने लगी। चिड़चिड़ापन व तनाव दूर हो गया।

मुझे यौगिक क्रिया हो रही है। यह तो कमाल हो गया ! 12 दिन में ही मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया हूँ। मन में शांति व आनन्द आने लगा है। लोग आश्चर्यचकित होने लगे हैं कि ये साला पागल ठीक कैसे हो गया ! यह सब गुरुदेव की कृपा, मंत्र जाप और ध्यान से ही हुआ है।

– प्रतीक कुमार जोशी
गाँव- देभारी, लुनावड़ा,
महीसागर, गुजरात

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्षा की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

www.the-comforter.org

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

www.the-comforter.org

चेतन गुरु की वाणी में जो प्रभाव और शक्ति होती है, वह छिपी नहीं रह सकती। वही बात एक कथावाचक या उपदेशक बहुत ही अच्छे ढंग से कह सकता है, वह बहुत कर्णप्रिय लगेगी परन्तु उपदेश समाप्त होने के बाद उसका कुछ भी प्रभाव आप पर नहीं बचेगा।

–गुरुदेव सियाग

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।